International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

स्त्री सैन्य शक्ति : रानी झाँसी रेजीमेंट की रणनीतिक भूमिका का विश्लेषण

राकेश कुमार
शोधार्थी, इतिहास विभाग एवं भारतीय संस्कृति, बनस्थली विद्यापीठ राजस्थान

डॉ० शिल्पी गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग एवं भारतीय संस्कृति, बनस्थली विद्यापीठ राजस्थान

शोध–सार

भारत के स्वतंत्र राष्ट्र बनने की संघर्षपूर्ण यात्रा में देश और विदेश – दोनों ही मोर्चों से साझा प्रयास किए गए। विशेष रूप से दक्षिण–पूर्व एशिया में स्थित क्रांतिकारी संगठनों और प्रवासी भारतीयों ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक समानांतर स्वतंत्रता आंदोलन को जन्म दिया। जापान, थाईलैंड, मलेशिया और जर्मनी जैसे देशों में बने गुप्त सैन्य अड्डों ने इस संघर्ष को धार दी। राष्ट्रवादी नेता रास बिहारी बोस ने जापान में आजाद हिंद फौज (INA) की नींव रखी। इसके बाद भारतीय स्वतंत्रता लीग (IIL) और विशेष रूप से महिला सैनिकों की रेजिमेंट – रानी लक्ष्मीबाई रेजिमेंट (RJR) – का गठन हुआ। यह शोध–पत्र उन रणियों के योगदान को रेखांकित करता है जिन्होंने देशभक्ति और साहस का परिचय देते हुए पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया।

मुख्य शब्द : ब्रिटिश साम्राज्यवाद, धुरी राष्ट्र, महिला शक्ति, सैन्य प्रशिक्षण, महिला सशक्तिकरण।

पृष्ठभूमि – दक्षिण–पूर्व एशिया और स्वतंत्रता आंदोलन

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान रास बिहारी बोस, बाबा अमर सिंह, बाबा उस्मान खान और स्वामी सत्यानंद पुरी जैसे निर्वासित भारतीय क्रांतिकारी दक्षिण–पूर्व एशिया में सक्रिय हो गए। 1942 में टोक्यो में रास बिहारी बोस ने भारतीय स्वतंत्रता लीग (IIL) की स्थापना की, जिससे इस क्षेत्र में कई शाखाएँ उभरने लगीं।

17 दिसंबर 1941 को पर्ल हार्बर पर जापान के हमले के साथ ही वह औपचारिक रूप से द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल हो गया। जापान ने धुरी राष्ट्रों (Axis Powers) की ओर से ब्रिटेन और ब्रिटिश भारत के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। इस अवसर का लाभ उठाते हुए रास बिहारी बोस ने टोक्यो और बैंकॉक में दो प्रमुख सम्मेलन आयोजित किए, जिससे IIL को संगठित और मजबूत बनाया गया। रास बिहारी बोस ने IIL के भीतर एक एक्शन काउंसिल का गठन किया, जिसका उद्देश्य स्वतंत्रता आंदोलन को विदेशी धरती से संगठित रूप से संचालित करना था। उन्होंने आजाद हिंद फौज (INA) – जिसे "आजाद हिंद वाहिनी" भी कहा गया – की नींव 1 सितंबर 1942 को रखी। प्रारंभ में इसमें 25,000 सैनिक थे, जो जल्दी ही बढ़कर 40,000 हो गए।

हालाँकि, कुछ संघर्ष भी सामने आए – मोहन सिंह और जापानी प्रशासन के बीच मतभेद हुए, जिससे अस्थायी रूप से सेना में विभाजन की स्थिति बन गई। इस संकट के समाधान हेतु 30 अप्रैल 1943 को सिंगापुर में एक सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें संगठनात्मक पुनर्गठन किया गया। इस खुले अधिवेशन में रास बिहारी बोस ने घोषणा की कि जापान सरकार ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस को दक्षिण–पूर्व एशिया लाने पर सहमति जताई है। 4 जुलाई 1943 को नेताजी ने IIL की बागडोर संभाली और सेना के सशक्तीकरण की दिशा में काम शुरू किया।

रानी लक्ष्मीबाई रेजिमेंट – महिला शक्ति का संगठित स्वरूप

नेताजी सुभाष चंद्र बोस के दक्षिण–पूर्व एशिया पहुँचने से पहले ही IIL की एक महिला शाखा कार्यरत थी, जो अस्पतालों में मरीजों की सेवा, शिविरों में बीमारों की देखभाल तथा अन्य महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी के लिए प्रेरित कर रही थी। अप्रैल 1943 में डॉ. लक्ष्मी स्वामीनाथन ने सिंगापुर में अपने भाषण में घोषणा की कि अब महिलाओं को भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करने का आह्वान किया गया है। उन्होंने नारी शक्ति को संगठित नेतृत्व देने की जिम्मेदारी भी ली।

IIL ने के. पी. के. मेनन के नेतृत्व में एक प्रसारण विभाग स्थापित किया, जिसमें अंग्रेजी, हिंदी और अन्य भाषाओं में बैंकॉक और सायगोन रेडियो से आजाद हिंद फौज व IIL से जुड़ी जानकारी प्रसारित की जाती थी। स्वयं डॉ. लक्ष्मी और अन्य INA अधिकारी इन प्रसारणों में भाग लेते थे।

प्रेरणास्रोत महिलाएं

प्रतिमा घोष, जिनके घर रंगून के पास IIL की एक शाखा खोली गई, महिलाओं को स्वतंत्रता के लिए जागरूक करने में लगी थीं। उन्होंने रेडियो पर अंग्रेजी में समाचार प्रसारित कर योगदान दिया।

कमला दास के अनुसार, RJR की नींव से पहले बर्मा में IIL की शाखाएं कार्यरत थीं, और महिलाओं को थिंगांग्युन (Thingangyun) नामक स्थान पर बनाए गए कैंप में प्रशिक्षण के लिए आमंत्रित किया गया।

कमला दास के अनुसार, "कर्नल लक्ष्मी ने महिलाओं के लिए एक विशेष शाखा बनाई। हम कमायत क्षेत्र की महिलाएं उनके नेतृत्व में पट्टियाँ बनाना, स्वेटर बुनना, आवश्यक सामग्री एकत्र करना और अस्पतालों में सहायता के लिए काम करती थीं।"

कप्तान लक्ष्मी का उदय

जब नेताजी ने महिला रेजिमेंट की स्थापना की इच्छा जताई, तब डॉ. लक्ष्मी स्वामीनाथन ने इस कार्य में भाग लेने की गहरी रुचि दिखाई। उन्होंने सिंगापुर स्थित IIL के प्रमुख येलप्पा से मिलकर इस विचार को मूर्त रूप देने की योजना बनाई।

12 जुलाई 1943 – ऐतिहासिक महिला सभा

- इस दिन नेताजी को महिलाओं द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया।

- 20 युवतियों को विशेष रूप से सैन्य सलामी की ट्रेनिंग दी गई थी।
- सफेद साड़ियों में, 303 राइफलों के साथ, महिलाओं ने नेताजी को सैन्य सम्मान दिया – यह दृश्य अविस्मरणीय था।

नेताजी ने सभा में अपने ऐतिहासिक भाषण में कहा– "भारत की स्वतंत्रता तब तक संभव नहीं जब तक भारतीय महिलाएं उसमें सक्रिय भाग न लें। उन्होंने हर आंदोलन में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाया है – और अब समय आ गया है कि वे युद्धक्षेत्र में भी उतरें। दिल्ली चलो!"

संगठनात्मक विकास और सैन्य प्रशिक्षण

रेजिमेंट का औपचारिक गठन

12 जुलाई 1943 की ऐतिहासिक सभा के अगले दिन, 13 जुलाई को, डॉ. लक्ष्मी स्वामीनाथन को येलप्पा द्वारा सूचित किया गया कि नेताजी उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहते हैं। यह दिन उनके जीवन का निर्णायक मोड़ बन गया। डॉ. लक्ष्मी ने अपने संस्मरण में लिखा – "मैं रोमांचित थी, किंतु थोड़ी सशंकित भी, क्योंकि मुझे एहसास था कि मुझे अब अपने पुराने सुरक्षित जीवन को छोड़कर जोखिम और रोमांच से भरी एक नई राह पर चलना होगा।"

नेताजी ने उन्हें स्पष्ट कर दिया कि वह उन्हें कोई सुरक्षा नहीं दे सकते। फिर भी, बिना झिझक डॉ. लक्ष्मी ने कैप्टन के रूप में RJR का नेतृत्व स्वीकार किया। यह भारत के इतिहास में पहली बार था जब केवल महिलाओं की सैन्य रेजिमेंट गठित हुई।

प्रारंभिक प्रशिक्षण और भर्ती

- 14 जुलाई 1943 – RJR ने आधिकारिक रूप से काम शुरू किया।
- येलप्पा और नेताजी के निजी सचिव आबिद हसन की सहायता से, प्रारंभ में उन्हीं 20 लड़कियों से बात की गई जिन्होंने नेताजी को गार्ड ऑफ ऑनर दिया था। इनमें से 15 लड़कियों ने स्वेच्छा से रेजिमेंट में भर्ती ली।
- 15 जुलाई से प्रशिक्षण शुरू हुआ, जो सिंगापुर के IIL कार्यालय में होता था।
- दो हफ्तों में संख्या 50 हो गई और जल्द ही यह 100 पार कर गई।

चिकित्सा इकाई और महिलाओं की अन्य भूमिकाएँ

16 जुलाई को आयोजित एक सभा में निर्णय लिया गया कि कुछ महिलाएं RJR में रेड क्रॉस और नर्सिंग इकाई में भी काम करेंगी। लवण्या चटर्जी जैसी महिलाओं ने घायल सैनिकों की सेवा का बीड़ा उठाया।

डॉ. लक्ष्मी ने सभा में कहा – "यह स्वतंत्रता की अंतिम लड़ाई है। हमें त्याग, सेवा और समर्पण का मार्ग अपनाना होगा। अगर आप सेना में शामिल नहीं हो सकतीं, तो घर की पुरानी साड़ियाँ पट्टियाँ बनाने के लिए दान करें।"

मलेशिया में भर्ती अभियान

IJARMT
International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

सितंबर 1943 में डॉ. लक्ष्मी मलेशिया गईं और महिलाओं से स्वतंत्रता संग्राम में जुड़ने का आह्वान किया। सेलंगोर में उन्होंने 25 सितंबर को भाषण देते हुए कहा – "भारत की स्वतंत्रता केवल पुरुषों के लिए नहीं है – यह देश की समस्त जनता की स्वतंत्रता है। मैं पूछती हूँ – महिलाओं, आप क्या दे सकती हैं?" उन्होंने लोगों से नेताजी पर पूर्ण विश्वास रखने और उनके नेतृत्व में समर्पित होकर जुड़ने का अनुरोध किया।

सिंगापुर में प्रशिक्षण शिविर की स्थापना

- 500 **महिलाओं** के लिए एक शिविर एक पुराने ऑस्ट्रेलियाई कैंप में स्थापित किया गया।
- नेताजी ने इसे 22 अक्टूबर 1943 को रानी लक्ष्मीबाई की जयंती पर उद्घाटित किया।
- सुब–कमांडेंट सत्यवती थेवर को सहायक प्रमुख बनाया गया। वे अनुशासित और समर्पित थीं, और बाद में उन्हें लेफ्टिनेंट पद पर पदोन्नत किया गया।

गांधी जयंती समारोह

- 2 अक्टूबर 1943 को गांधी जयंती के अवसर पर RJR की महिलाएं साड़ी के बजाय फुल मिलिट्री यूनिफॉर्म में मार्च में शामिल हुईं।
- 'Young India' ने लिखा – "रेजिमेंट ने सुसज्जित ढंग से मार्च किया और उनकी अनुशासित उपस्थिति उनकी नेता डॉ. लक्ष्मी की अद्भुत संगठन क्षमता का प्रमाण थी।"

स्वतंत्र आजाद हिंद सरकार और रेजिमेंट की ऐतिहासिक भूमिका

आजाद हिंद सरकार का गठन

21 अक्टूबर 1943 – यह दिन आजाद हिंद फौज के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हुआ जब नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने सिंगापुर के कैथे सिनेमा हॉल में "स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार" (Provisional Government of Free India) की स्थापना की घोषणा की।

इस ऐतिहासिक पल से पहले, नेताजी ने डॉ. लक्ष्मी से पूछा था – "क्या आप मेरी कैबिनेट में एक मंत्री के रूप में शामिल होने को तैयार हैं?"

डॉ. लक्ष्मी लिखती हैं – "मैं बिल्कुल तैयार नहीं थी, पर यह सम्मान केवल मेरे लिए नहीं, बल्कि समस्त भारतीय नारी शक्ति के लिए था, इसलिए मैंने स्वीकार कर लिया।" इस प्रकार, डॉ. लक्ष्मी स्वामीनाथन बनीं –

- भारत की पहली महिला सैन्य अधिकारी
- आजाद हिंद सरकार की प्रथम महिला मंत्री

शिविर का उद्घाटन – 22 अक्टूबर 1943

नेताजी ने रानी लक्ष्मीबाई की जयंती पर RJR के नए कैंप का उद्घाटन किया। इस दिन की तैयारी नेताजी ने तब से शुरू की थी जब वे जर्मनी से पनडुब्बी में केन्या होते हुए

जापान आ रहे थे। उनके सचिव आबिद हसन के अनुसार, पनडुब्बी में भी नेताजी RJR की योजना बना रहे थे, और उन्हीं क्षणों में उन्होंने कहा था – "भारतीय महिलाएं जब कभी भी विकल्प में खड़ी रही – मृत्यु और अपमान के बीच – उन्होंने हमेशा मृत्यु को चुना है।"

सैनिक वर्दी और परेड

- RJR की महिलाएं धूसर रंग की वर्दी, हाथों में डच और कैनेडियन रायफलें लिए खड़ी थीं।
- नेताजी ने सैन्य सलामी ली और भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया।
- सभी भारतीय और जापानी अधिकारी रेजिमेंट की परेड और अनुशासन देखकर अभिभूत थे।

कई लोगों को प्रारंभ में संदेह था कि क्या एक महिला रेजिमेंट सफल हो पाएगी – लेकिन यह दृश्य उस संदेह का उत्तर था!

कैप्टन लक्ष्मी का प्रेरणादायक भाषण

"हम यहाँ एक महान बेटी – रानी लक्ष्मीबाई की जयंती मनाने के लिए एकत्र हुए हैं। उसका बलिदान केवल एक स्मृति नहीं, बल्कि एक आह्वान है कि हम भी अपने प्राणों की आहुति देने को तैयार रहें। आज से हमारा सफर आरंभ होता है – जो दिल्ली के लाल किले पर आजादी का झंडा फहराने तक समाप्त नहीं होगा।"

नेताजी का उद्घाटन भाषण

"हमारे इतिहास में यह दिन एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। अगर झाँसी के स्वतंत्रता संग्राम के लिए भारत ने एक लक्ष्मीबाई को जन्म दिया था, तो आज सम्पूर्ण भारत की स्वतंत्रता के लिए हमें हजारों लक्ष्मीबाईयों की आवश्यकता है।" उन्होंने कहा कि स्योवन में RJR का केंद्रीय प्रशिक्षण शिविर जल्द ही 1000 महिला सैनिकों से भर जाएगा। थाईलैंड और बर्मा में भी महिला प्रशिक्षण शिविर आरंभ किए जा चुके थे।

निष्कर्ष

दक्षिण और दक्षिण–पूर्व एशिया में स्थित क्रांतिकारी संगठनों ने भारत की स्वतंत्रता की दिशा में क्रांतिकारी कार्य किए। रास बिहारी बोस और नेताजी सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में IIL और RJR जैसे संगठनों का विकास हुआ। RJR की बहादुर महिलाओं ने न केवल युद्ध में भाग लिया, बल्कि उन्होंने समाज को यह दिखाया कि भारतीय नारी भी हथियार उठा सकती है, वर्दी पहन सकती है, और देश के लिए प्राण भी दे सकती है। यह रेजिमेंट भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में हमेशा के लिए अंकित रहेगी।

संदर्भ सूची

- घोष, के.के., (एन.डी.), दा इंडियन नेशनल आर्मी : सैकेन्ड फ्रन्ट ऑफ दा इंडियन इंडिपेंडेंस मूवमेंट, पृष्ठ 132
- हसन सफरानी, ए. (एन.डी.), दा मैन फ्रॉम इंफाल, पृष्ठ 15–16

- इंटरव्यू कमल दास, 2 फरवरी, 2000, कलकत्ता
- इंटरव्यू लबान्या चटर्जी, 2 सितम्बर, 2005, कलकत्ता
- इंटरव्यू लक्ष्मी सहगल, 8 जुलाई 2001, कानपुर
- इंटरव्यू प्रतिमा घोस, 1 अप्रैल 2000, सालकिया, हावड़ा
- जग प्रवेश चन्द्र, (एन.डी.), मिट कर्नल लक्ष्मी, पृष्ठ 18
- खान, एम.जी.एस.एन. (एन.डी.), माई मैमोरिज़ ऑफ आई.एन.ए. एण्ड इट्स नेताजी, पृष्ठ 1
- मुखोपाध्याय, यू. (एन.डी.), अन्नया बिपलाबी रासबिहारी बोस, जयश्री, बंगाली, 56
- सहगल, एल. (एन.डी.), ए रिव्यूलेशनरी लाईफ : मैमोरिज़ ऑफ ए पॉलिटिक्ल एक्टीविस्ट, पृष्ठ 42, 56–57
- सहगल, एल, 23 जनवरी, 1971, रानी झांसी रेजिमेंट, अमृता बाजार पत्रिका, पृष्ठ 12
- सरीन, टी.आर. (सम्पादक) (एन.डी.), इंडियन नेशनल आर्मी : ए डॉक्यूमेंटरी स्टडी, वाल्यूम 2, पृष्ठ 190–191
- बोस, एस.के. एवं बोस, एस. (सम्पादक) (एन.डी.), नेताजी कॉलेक्टिड वर्क्स, वाल्यूम 12, पृष्ठ 55–59, 124–127, 418
- चट्टोपाध्याय, एस. (एन.डी.), सुभाष चन्द्र और नेताजी सुभाष चन्द्र, बंगाली, पृष्ठ 132–133
- गांवकर, आर. (सम्पादक), (एन.डी.), कैप्टन लक्ष्मी एबांग रानी झांसी बाहिनी : एकती एकथीतो इतिहास, पृष्ठ 171–172
- डी.एस. (एन.डी.), आमी सुभाष बोलची, तिर्तिया केन्द्र, बंगाली, पृष्ठ 62–63
- गिनी, के.एस. (एन.डी.), इंडियन इंडिपेंडेंस मेवमेंट इन ईस्ट एशिया, भाग–2, पृष्ठ 81–83